



कपास की खेती के लिए ८ अक्टूबर से १४ अक्टूबर २०२६ तक अठारहवीं साप्ताहिक सलाह

• मृदा स्वास्थ्य, पोषण, कीट और रोग प्रबंधन पर सामान्य सलाह

कपास की अधिक पैदावार संतुलित मृदा पोषण, जल प्रबंधन और सक्रिय, निगरानी-आधारित कीट एवं रोग प्रबंधन पर निर्भर करती है। एक समग्र और एकीकृत फसल प्रबंधन योजना को लागू करने से उचित वृद्धि और मजबूती सुनिश्चित होती है, लागत कम होती है और फसल को विनाशकारी कीटों और रोगों से होने वाले नुकसान से बचाया जा सकता है।

मृदा स्वास्थ्य एवं पोषण प्रबंधन (आईएनएम)

- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का अनुकूलन करें:** फसल चक्र, जैविक संशोधनों और आवरण फसलों को प्राथमिकता देकर और बुवाई से पहले मिट्टी परीक्षण के आधार पर तर्कसंगत रासायनिक उर्वरक का उपयोग करके मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करें।
- **सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रयोग करें:** आवश्यकतानुसार लक्षित पर्ण स्प्रे के माध्यम से द्वितीयक और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी (जैसे जस्ता, बोरॉन, मैंगनीज और मैग्नीशियम) को सक्रिय रूप से दूर करें।

रोग प्रबंधन (आईडीएम)

- **निवारक उपायों को अपनाएं:** मिट्टी जनित और पर्ण जनित दोनों प्रकार के रोगजनकों का प्रबंधन एकीकृत कृषि पद्धतियों के माध्यम से किया जाना चाहिए, जिसमें उचित खेत की स्वच्छता और पौधों के स्वास्थ्य को बढ़ाने और रोग की घटनाओं को कम करने के लिए बीज और मिट्टी के उपचार के रूप में जैव कीटनाशकों और जैव उर्वरकों का अनुप्रयोग शामिल है।
- **पत्तों पर होने वाले प्रकोपों को नियंत्रित करें:** उच्च आर्द्रता की अवधि के दौरान नियमित रूप से खेत की निगरानी की जानी चाहिए, और अनुशंसित फफूंदनाशकों का प्रयोग विवेकपूर्ण तरीके से केवल तभी किया जाना चाहिए जब प्रचलित पर्यावरणीय परिस्थितियां रोग के तेजी से विकास और प्रसार के लिए अनुकूल हों।

एकीकृत कीट प्रबंधन (आईपीएम)

- **क्षेत्र निरीक्षण करें:** थ्रिप्स, तेला, तेला और स्पाइडर माइट्स जैसे चूसने वाले कीटों के साथ-साथ सुंडी की निगरानी के लिए साप्ताहिक क्षेत्र निरीक्षण करें।
- **जाल और जैव-कीटनाशकों का उपयोग करें:** वयस्क पतंगों की उड़ान पर नज़र रखने, अंडे देने के चक्रों का अनुमान लगाने और प्राथमिक प्रतिक्रिया के रूप में जैविक, प्राकृतिक या पौधों पर आधारित कीटनाशकों का प्रयोग करने के लिए मौसम की शुरुआत में ही फेरोमोन जाल लगाएं।

- **प्राकृतिक शत्रुओं का संरक्षण करें:** लेडी बीटल, लेसविंग्स और बिग-आइड बग जैसे लाभकारी कीटों की रक्षा के लिए व्यापक-स्पेक्ट्रम फ़ार्मूलों के बजाय अत्यधिक चयनात्मक कीटनाशकों का चयन करें।
- **रासायनिक हस्तक्षेपों को सीमित करें:** लेबल पर अनुशंसित रासायनिक कीटनाशकों का उपयोग सख्ती से अंतिम उपाय के रूप में करें, और उनका केवल तभी उपयोग करें जब कीटों की संख्या निर्धारित आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तर सीमा तक पहुंच जाए।

स्वच्छ तरीके से कपास चुनना और भंडारण

- अच्छी बाजार कीमत प्राप्त करने के लिए स्वच्छ कपास चुनने की मानक प्रक्रियाओं का पालन करें।
- कपास कि थैलियों के अलावा प्लास्टिक बैग, प्लास्टिक शीट या अन्य सामग्री का उपयोग कपास के संग्रहण और भंडारण के लिए न करें।

ब.स्थान-विशिष्ट सलाह

हरियाणा		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		सितम्बर / अक्टूबर							अक्टूबर				
		29	30	01	02	03	04	05	07	08	09	10	11
	हिसार	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0.4
	जींद								0	0	0	0.1	2
	सिरसा								0	0	0	0	1
	रोहतक	13	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0.4
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी		64.5 से 115.5 मिमी		115.6 से 204.4 मिमी			
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा			

फसल की स्थिति:

हिसार में, फसल को डोडे (गुलर) बनने से लेकर डोडे खुलने/परिपक्व होने की अवस्था में 133 से 168 दिन कि हैं। कुछ खेतों में कपास कि तुड़ाई चल रही है। रिपोर्टिंग अवधि के दौरान देर से बोई गई कपास में 13:00:45 की दर से 2 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से पत्तों पर (पर्णिय) छिड़काव (स्प्रे) किया गया। कुछ खेतों में सफेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक स्तर से अधिक हो गया। कई खेतों में गुलाबी सुंडीके कारण हरे डोडों को हुए नुकसान और ट्रैप कैच आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक स्तर से ऊपर थे। कुछ खेतों में डोडों में सड़न के साथ-साथ कपास कि पत्ती मरोड़ विषाणु रोग की गंभीरता कम देखी गई। कुछ खेतों के कुछ हिस्सों में जड़ सड़न और मुरझान भी देखी गई।

सिरसा में, फसल 142 से 162 दिन कि है और उसके डोडे (गुलर) खुलने की अवस्था में है। रिपोर्टिंग अवधि के दौरान बादल छाए रहे, गर्मी, उमस और शुष्क मौसम रहा। अधिकांश स्थानों पर कपास कि दूसरी तुड़ाई शुरू हो चुकी है। कपास के खेतों में कुछ स्थानों पर खरपतवारों का प्रकोप देखा गया, जिससे पौधों की वृद्धि कम हुई। पोषक तत्वों और पानी की कमी के कारण छिटपुट स्थानों पर पैरा विल्टिंग के लक्षण भी दिखाई दिए। सभी स्थानों पर तेला और थ्रिप्स की संख्या आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक स्तर (ETL) से कम दर्ज की गई। गुलाबी सुंडी का प्रकोप भी आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक स्तर से अधिक पाया गया, जिससे 40-60% हरे डोडों को नुकसान हुआ।

सलाह:

हिसार में किसानों को कपास के खेतों में सिंचाई न करने की सलाह दी जाती है। देर से बोई गई कपास में 13:00:45 का 2 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से पर्णिय छिड़काव करें। तेला और सफेद मक्खी को नियंत्रित करने के लिए फ्लोनिक्मिड 50 डब्ल्यूजी 80 ग्राम प्रति एकड़ और एफिडोपायरोपेन 50 जी/एल डीसी 400 मिलीलीटर की दर से छिड़काव करें। यदि सफेद मक्खी का संक्रमण मध्यम से अधिक हो और उसमें निम्फ मौजूद हों, तो पाइरिप्रॉक्सीफेन 10 ईसी 400 मिलीलीटर या

स्पाइरोमेसिफेन 240 एससी 240 मिलीलीटर प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करें। कीटनाशकों को टैंक में मिलाकर उपयोग न करें। गुलाबी सुंडीका संक्रमण शुरू होने के बाद, 2 फेरोमोन ट्रेप प्रति एकड़ की दर से लगाएं। गुलाबी सुंडी के संक्रमण की जांच के लिए प्रति एकड़ कम से कम 100 फूल या 20 हरे बॉल की जांच करें। फूल आने की शुरुआती अवस्था में सुंडी संक्रमित और सुंडी प्रभावित (रोसेट) फूलों को इकट्ठा करके नष्ट कर दें। यदि फूल/डोड़ों में गुलाबी सुंडी का संक्रमण आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक स्तर (>5%) को पार कर जाता है, तो इमेमेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी @100 ग्राम या प्रोफेनोफोस 50 ईसी @ 500 मिली/एकड़ या किनालफोस 20 एएफ @ 400 मिली प्रति एकड़ का छिड़काव करें। पिछले छिड़काव के 10-12 दिन बाद किसी वैकल्पिक कीटनाशक का छिड़काव किया जा सकता है। जड़ सड़न और मुरझान से प्रभावित क्षेत्रों में, प्रभावित पौधों की जड़ों और आसपास के पौधों को कार्बेन्डाजिम 50 WP @ 1.2 ग्राम/लीटर पानी से अच्छी तरह भिगो दें। यदि परविल्ट दिखाई दे, तो लक्षण विकसित होने के तुरंत बाद एक सप्ताह के अंतराल पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP @ 250 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% WP @ 120 ग्राम प्लस यूरिया 2 किलो प्रति 100 लीटर पानी के घोल से 2-3 बार भिगो दें। नमी पूरी तरह सूखने के बाद तनावग्रस्त, अच्छी तरह से खिले हुए डोड़ों में से कपास कि तुड़ाई करें। डोड़ों में सड़न और पत्तों पर धब्बे के प्रबंधन के लिए, कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% WP @30 ग्राम का पर्णिय छिड़काव, उसके बाद प्रोपिनेब 70% WP @25-30 ग्राम या प्रोपिकोनाजोल 25% EC @10 मिलीलीटर या एजोक्सिस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफिनोकोनाजोल 11.4% w/w SC @10 मिलीलीटर या फ्लक्सैपायरोक्साड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर SC @6 मिलीलीटर को 10 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करने की सलाह दी जाती है, विशेष रूप से फूल आने के 60-120 दिनों के दौरान और मौसम की स्थिति के अनुसार। यदि कालिमा फफूंद लग जाए, तो 10-15 दिनों के अंतराल पर प्रोपिकोनाजोल 25% ईसी @ 10 मिली/10 लीटर (500 मिली/हेक्टेयर) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (सीओसी) 50% डब्ल्यूपी @ 25 ग्राम/10 लीटर (1250 ग्राम/हेक्टेयर) का 1-2 बार छिड़काव करें। चूंकि कटाई शुरू हो चुकी है, इसलिए इसे केवल अच्छी तरह से खिले हुए डोड़ों से ही, तेज धूप वाले दिनों में करें और उपज (तुड़ाई किया हुआ कपास) को ठंडी और सूखी जगह पर संग्रहित करें।

सिरसा में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे कपास को सूखा, कचरे से मुक्त और ओस रहित अवस्था में तोड़ें (चुने करे)। बीज कपास को साफ-सुथरे और चूहे रहित गोदामों/कमरों में संग्रहित करें। प्रति एकड़ 2 फेरोमोन ट्रेप (लगातार 3 रातों तक 5-8 पतंगे पकड़ना) या हरे कपास के डोड़ों का नियमित अंतराल पर नमूना लेकर (प्रति एकड़ 20 बीजों में से 2 क्षतिग्रस्त बीज) गुलाबी सुंडी की निगरानी करें ताकि आर्थिक दृष्टी से नुकसानदायक स्तर का आकलन किया जा सके। गुलाबी सुंडी के लिए, एथियन 50 ईसी @ 800 मिली या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 100-200 मिली या लैम्डा-साइहलोथ्रिन 5 ईसी @ 200 मिली या साइपरमेथ्रिन 10 ईसी @ 200-300 मिली या साइपरमेथ्रिन 25 ईसी @ 80-100 मिली या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @ 160-200 मिली या अल्फामेथ्रिन 10 ईसी @ 100-125 मिली या फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी @ 300-400 मिली प्रति एकड़ 150-200 लीटर पानी में मिलाकर प्रयोग करें। आवश्यकता पड़ने पर कीटनाशकों का बारी-बारी से प्रयोग करें। देर से बोई गई फसल में जड़ सड़न और मुरझान रोग से निपटने के लिए, शुरुआती लक्षण वाले पौधों और आसपास के पौधों को ट्राइकोडर्मा एसपीपी. 1% डब्ल्यूपी @ 5 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% डब्ल्यूपी @ 2 ग्राम/लीटर पानी से भिगो दें।

राजस्थान		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		सितम्बर / अक्तूबर							अक्तूबर				
		29	30	01	02	03	04	05	07	08	09	10	11
	अजमेर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	जोधपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	नागौर								0	0	0	0	0
	पाली	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0.2
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी		64.5 से 115.5 मिमी		115.6 से 204.4 मिमी			
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा			

फसल की स्थिति:

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में, फसल 138 से 154 दिन कि है और उसमें डोडे (गुलर) फूटने की अवस्था आ गई है। समय पर बोई गई फसल में कपास कि तुड़ाई जारी है। तेला की संख्या 0.0 से 3.0 प्रति तीन पत्ती तक, सफेद मक्खी की संख्या 4.0 से 22.0 प्रति तीन पत्ती तक और थ्रिप्स की संख्या 0.0 से 2.0 प्रति तीन पत्ती तक पाई गई।

बांसवाड़ा में, फसल फूल आने और डोडे (गुलर) बनने की अवस्था में 92 से 99 दिन कि है। समय पर छिड़काव के कारण खेत साफ-सुथरे हैं और फसल की स्थिति अच्छी है। खरपतवारों का कोई प्रकोप नहीं है। पत्तों से रस चूसने वाले कीटों में, सफेद मक्खी का प्रकोप आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तर (ETL) से कम और तेला का आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तर (ETL) से अधिक था। गुलाबी सुंडी का कोई प्रकोप या रोग का प्रकोप नहीं है।

सलाह :

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे फसलों में कीटों और रोगों की नियमित निगरानी करें। पिछले वर्ष जिन स्थानों पर गुलाबी सुंडी का प्रकोप पाया गया था, उन स्थानों पर इस वर्ष भी इसके प्रकोप की गहन निगरानी आवश्यक है। गुलाबी बॉलवर्म की गतिविधि पर नज़र रखने के लिए 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर की दर से लगाएं। यदि प्रति 100 फूलों में से 5 से अधिक फूलों पर सुंडी प्रभावित फूल (रोसेट) दिखाई दें या डोडों में 5% से अधिक कीटों का प्रकोप हो, तो प्रोफेनोफोस 50% ईसी को 2.5 मिली/लीटर की दर से या इमेमेक्टिन बेंजोएट 5 एसजी को 0.50 ग्राम/लीटर की दर से या इंडोक्साकार्ब 14.5 एससी को 1.0 मिली/लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। जैसिड और सफेद मक्खी को नियंत्रित करने के लिए फ्लोनिकैमिड 50 डब्ल्यूजी का 0.40 ग्राम/लीटर या एफिडोपायरोपेन 50 डीसी का 1.50 मिलीलीटर/लीटर पानी में या थियामेथॉक्सम 24 डब्ल्यूजी का 0.5 ग्राम/लीटर पानी में छिड़काव करें, जबकि सफेद मक्खी के निम्फ के मामले में, पाइरिप्रॉक्सीफेन 10% ईसी का 2.5 मिलीलीटर/लीटर या स्पाइरोमेसिफेन 22.9 एससी का 1.25 मिलीलीटर/लीटर पानी में छिड़काव करें। यदि थ्रिप्स का संक्रमण आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तर से अधिक हो, तो स्पिनेटोरम 11.7 SC को 0.84 मिली/लीटर या प्रोफेनोफोस 50 EC को 2.5 मिली/लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे करें। यदि कालिमायुक्त फफूंद लग जाए, तो प्रोपिकोनाजोल 25% EC को 10 मिली/10 लीटर (500 मिली/हेक्टेयर) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (COC) 50% WP को 25 ग्राम/10 लीटर पानी (1250 ग्राम/हेक्टेयर) में मिलाकर 10-15 दिनों के अंतराल पर 1-2 निवारक/उपचारात्मक स्प्रे करें।

दक्षिण राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद, सलूबर और उदयपुर) में, जहां नम मिट्टी की स्थिति में हाथ से निराई संभव नहीं है, किसानों को सलाह दी जाती है कि यदि खेत में घास वाली खरपतवारें फैली हों तो क्विज़ालोफ़ॉप एथिल 5% ईसी @ 2 मिली/लीटर पानी का प्रयोग करें, या चौड़ी पत्ती वाली खरपतवारों के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 10% ईसी @ 1.25 मिली/लीटर पानी का प्रयोग करें, या घास और चौड़ी पत्ती वाली दोनों प्रकार की खरपतवारों को नियंत्रित करने के लिए पाइरिथियोबैक सोडियम 6% ईसी + क्विज़ालोफ़ॉप एथिल 4% ईसी @ 2-2.5 मिली/लीटर पानी का प्रयोग करें। कपास के खेतों में रसचूसने वाले कीटों के संक्रमण के किसी भी लक्षण के लिए लगातार निगरानी करते रहें। यदि संक्रमण ईटीएल से अधिक हो जाए तो चूसने वाले कीटों को नियंत्रित करने के लिए 5% नीम के बीज के अर्क (एनएसकेई) या एज़ाडिराक्टिन 1500 पीपीएम (0.15% ईसी) @ 5 मिली/लीटर पानी का छिड़काव करें। सफेद मक्खी और तेला को नियंत्रित करने के लिए 8-10 पीले चिपचिपे जाल प्रति एकड़ की दर से लगाएं। यदि रस चूसने वाले कीटों की संख्या आर्थिक दृष्टि से नुकसानदायक सीमा स्तर से अधिक हो जाए, तो इनमें से किसी एक कीटनाशक का छिड़काव करें: बुप्रोफेज़िन 25 EC @ 1.25 लीटर/हेक्टेयर या डायफेंथियूरॉन 50 WP @ 625 ग्राम/हेक्टेयर या फ्लोनिकैमिड 50 WG @ 200 ग्राम/हेक्टेयर। गुलाबी बॉलवर्म की निगरानी के लिए फेरोमोन ट्रैप लगाएं (5/हेक्टेयर)। गुलाबी सुंडी की उपस्थिति की नियमित रूप से निगरानी करें और प्रभावित फूलों (रोसेट फूल) को इल्लियों सहित नष्ट कर दें। देर से बोई गई फसलों में पत्ती धब्बा रोग के प्रबंधन के लिए, 10 लीटर पानी में कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डब्ल्यूपी @ 30 ग्राम का पर्णिय छिड़काव, उसके बाद प्रोपिनेब 70% डब्ल्यूपी @ 25-30 ग्राम या प्रोपिकोनाजोल 25% ईसी @ 10 मिलीलीटर या एजोक्सिस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफिनोकोनाजोल 11.4% w/w एससी @ 10 मिलीलीटर या फ्लक्सैपायरोक्साड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 मिलीलीटर का छिड़काव करने की सलाह दी जाती है।

मध्य प्रदेश		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा (मिमी)							अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		सितम्बर / अक्टूबर							अक्टूबर				
		29	30	01	02	03	04	05	07	08	09	10	11
	खरगाँव	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0.1	0	0	0
	धार	0	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0	0	0
	खांडवा	0	0	0	0	0	0	0	0.1	0.2	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 से 2.4 मिमी		2.5 से 15.5 मिमी		15.6 से 64.4 मिमी			64.5 से 115.5 मिमी			115.6 से 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा			भारी वर्षा			बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

खंडवा में बोई गई फसल फूल आने और डोडे (गुलर) बनने की अवस्था में 84 से 132 दिन कि है। आवश्यकतानुसार खरपतवार नियंत्रण और उर्वरक का प्रयोग किया गया है। मौसमी खरपतवारों ने खेतों को बुरी तरह प्रभावित किया है। कुछ खेतों में तेला, चेपा और सफेद मक्खियों का प्रकोप देखा गया है। अभी तक किसी भी प्रकार की बीमारी की सूचना नहीं मिली है।

सलाह:

खंडवा में किसानों को समय पर खरपतवार नियंत्रण करने की सलाह दी जाती है। यदि लंबे समय तक सूखे के कारण फसल में नमी की कमी हो रही है, तो 13:00:45 के दो पर्णिय (पत्तोंपर) स्प्रे 2 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से 150 से 200 लीटर पानी में मिलाकर 10 दिनों के अंतराल पर दें। गुलाबी सुंडी की निगरानी के लिए 2 फेरोमोन ट्रेप प्रति एकड़ लगाएं। पत्तों का रस चूसने वाले कीटों को नियंत्रित करने के लिए NSKE 5% + नीम का तेल 5 मिली/लीटर या नीम के तेल आधारित फॉर्मूलेशन (300 या 1500 पीपीएम) 5 मिली/लीटर + 1.0 ग्राम लॉन्ड्री डिटर्जेंट इमल्शन का प्रयोग करें। यदि पैराविल्ट रोग दिखाई दे, तो लक्षण विकसित होने के तुरंत बाद एक-एक सप्ताह के अंतराल पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50% WP @ 250 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50% WP @ 100 ग्राम प्लस यूरिया 2 कि.ग्रा. प्रति 100 लीटर पानी के घोल से 2-3 बार जड़ों में सिंचाई करें। लंबे समय तक सूखे की स्थिति में, फल लगने की चरम अवस्था के दौरान 13:00:45 का 2 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में मिलाकर 7 से 10 दिनों के अंतराल पर पत्तियों पर छिड़काव करें। कपास के फूलों को प्राकृतिक रूप से झड़ने से बचाने के लिए 4 मिली/10 लीटर पानी की दर से NAA का पत्तियों पर छिड़काव करें।

कपास उत्पादन तकनीक, जैसे मिट्टी का चयन, किस्में, उर्वरकों का प्रयोग, बुवाई के तरीके, सिंचाई प्रणाली, खरपतवारों, कीटों और रोगों का प्रबंधन आदि की विस्तृत जानकारी आईसीएआर-सीआईसीआर, नागपुर द्वारा विकसित एंड्रॉइड आधारित सीआईसीआर कॉटन ऐप से प्राप्त की जा सकती है। इस ऐप को गूगल प्ले स्टोर से नि:शुल्क डाउनलोड किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, फसल वृद्धि अवस्था विशिष्ट और मौसम आधारित साप्ताहिक सलाह आईसीएआर-सीआईसीआर की वेबसाइट (<https://cicr.org.in/resource-weekly-advisory>) पर भी अपलोड की जाती है ताकि किसानों के लाभ के लिए परामर्श किया जा सके।

Advisory issued by:

Dr. Vijay N. Waghmare

Director, ICAR-Central Institute for Cotton Research, Nagpur

Compilation by Dr. Isabella Agarwal

Editing Team:

Dr. G. T. Behere

Dr. A. S. Tayade

Dr. A. H. Prakash

Dr. S.K. Verma

Dr. S.K. Sain

Dr. Rishi Kumar

Dr. Babasaheb B. Fand

Dr. Ramkrushna GI

Dr. S.P. Gawande

Dr. Shivaj Thube

Dr. R.R. Chapke

Regional language translation:

Hindi : Mr Ghanshyam Deogirikar & Mr Ashutosh Mishra

Punjabi	: Dr Amarpreet Singh
Tamil	: Dr. A. Manikandan & Dr. M Saravanan
Telugu	: Dr L. Rajesh Chaudhary
Marathi	: Dr Vrushali Deshmukh & Mrs Pooja Ghonge
Gujrati	: Dr H R. Desai & Dr Vivek Shah
Oriya	: Dr B. S. Nayak
Kannada	: Dr Neelkanth Hiremani